CBSE Class 09 Hindi Course A
NCERT Solutions
क्षितिज पाठ-10 ललद्यद

1. 'रस्सी' यहाँ पर किसके लिए प्रयुक्त हुआ है और वह कैसी है ?

उत्तर:- रस्सी यहाँ पर मानव के शरीर के लिए प्रयुक्त हुई है और यह रस्सी कच्ची तथा नाशवान है अर्थात् यह कब टूट जाए यह कहा नहीं जा सकता है।भक्ति रूपी रस्सी के सहारे कवयित्री ईश्वर तक पहुँचना चाहती है लेकिन वह माध्यम अभी कमज़ोर होने से उसे असफलता मिल रही है।

2. कवयित्री द्वारा मुक्ति के लिए किए जाने वाले प्रयास व्यर्थ क्यों हो रहे हैं ?

उत्तर:- कवयित्री सांसारिकता तथा मोह के बंधनों से मुक्त नहीं हो पा रही है ऐसे में वह प्रभु भक्ति सच्चे मन से नहीं कर पा रहीं है,जैसे कच्चे मिट्टी के सकोरे में रखा जल ज्यादा देर ठहर नहीं पाता,उसी प्रकार कवयित्री के प्रयास अभी कच्चे हैं इसलिए उसके द्वारा मुक्ति के प्रयास भी विफल होते जा रहे हैं।

3. कवयित्री का 'घर जाने की चाह' से क्या तात्पर्य है?

उत्तर:- कवयित्री का घर जाने की चाह से तात्पर्य है प्रभु से मिलना। कवयित्री इस भवसागर को पार करके अपने परमात्मा की शरण में जाना चाहती है अर्थात आत्मा परमात्मा से मिलना चाहती है,वह सांसारिक मायामोह में भटकना नहीं चाहती है।

4. भाव स्पष्ट कीजिए -

1-जेब टटोली कौड़ी न पाई।

उत्तर:- कवयित्री कहती है कि इस संसार में आकर वह सांसारिकता में उलझकर रह गयी और जब अंत समय आया और जेब टटोली अर्थात आत्मनिरीक्षण किया तो उसे कुछ भी हासिल न हुआ अब उसे चिंता सता रही है कि भवसागर पार कराने वाले मांझी अर्थात् ईश्वर को उतराई के रूप में क्या देगी।

2- खा-खाकर कुछ पाएगा नहीं,
न खाकर बनेगा अंहकारी।

उत्तर:- प्रस्तुत पंक्तियों में कवयित्री मनुष्य को ईश्वर प्राप्ति के लिए मध्यम मार्ग अपनाने को कह रही है। कवयित्री कहती है कि मनुष्य को भोग विलास में पड़कर कुछ भी प्राप्त होने वाला नहीं है। मनुष्य जब सांसारिक भोगों को पूरी तरह से त्याग देता है तब उसके मन में अंहकार की भावना पैदा हो जाती है। अत:अहंकार रहित होकर, माया मोह से विरक्त रहते हुए ईश्वर प्राप्ति का प्रयास करना चाहिए।

5. बंद द्वार की साँकल खोलने के लिए ललद्यद ने क्या उपाय सुझाया है?

उत्तर:- बंद द्वार की साँकल खोलने के लिए ललद्यद ने उपाय सुझाया है कि भोग-विलास और त्याग के बीच संतुलन बनाए रखते हुए। मनुष्य को सांसारिक विषयों में न तो अधिक लिप्त और न ही उससे विरक्त होना चाहिए। अज्ञान ही बंद द्वार की सांकल है,अन्त:एवं बाह्य इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखने से मुक्ति मिल सकती है।

6. ईश्वर प्राप्ति के लिए बहुत से साधक हठयोग जैसी कठिन साधना भी करते हैं, लेकिन उससे भी लक्ष्य प्राप्ति नहीं होती। यह भाव किन पंक्तियों में व्यक्त हुआ है ?

उत्तर:- उपर्युक्त भाव निम्न पंक्तियों में व्यक्त हुआ है -

आई सीधी राह से, गई न सीधी राह।
सुषुम-सेतु पर खड़ी थी, बीत गया दिन आह !
जेब टटोली, कौड़ी न पाई।
माझी को दूँ, क्या उतराई ?

7. 'ज्ञानी' से कवयित्री का अभिप्राय है ?

उत्तर:- ज्ञानी से कवयित्री का अभिप्राय है जिसने आत्मा और परमात्मा के सम्बन्ध को जान लिया हो। कवयित्री के अनुसार ईश्वर का निवास तो हर एक कण-कण में है परन्तु मनुष्य इसे धर्म में विभाजित कर मंदिर और मस्जिद में खोजता फिरता है। वास्तव में ज्ञानी तो वह है जो अपने अंतकरण में ईश्वर को पा लेता है।

• रचना और अभिव्यक्ति

8.1 हमारे संतों, भक्तों और महापुरुषों ने बार-बार चेताया है कि मनुष्यों में परस्पर किसी भी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं होता, लेकिन आज भी हमारे समाज में भेदभाव दिखाई देता है -
आपकी दृष्टि में इस कारण देश और समाज को क्या हानि हो रही है ?

उत्तर:- समाज में व्याप्त भेदभाव के कारण निम्न हानियों हो रही है -

1. हिंदू मुस्लिम का झगड़ा इसी भेदभाव की उपज है जिसके परिणाम स्वरूप भारत पाकिस्तान दो देश बने।
2. भेदभाव के कारण ही उच्च और निम्न वर्ग में सामंजस्य स्थापित नहीं हो पाता।
3. पर्वों के समय अनायास झगड़े की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।
4. आपसी भेदभाव के कारण ही एक वर्ग दूसरे वर्ग को संदेह और अविश्वास की दृष्टि से देखता है।
5. भेदभाव की उपज से अलगाववाद, उग्रवाद,आतंकवाद जैसी सामाजिक समस्याएँ पैदा होती हैं।

8.2 हमारे संतों, भक्तों और महापुरुषों ने बार-बार चेताया है कि मनुष्यों में परस्पर किसी भी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं होता, लेकिन आज भी हमारे समाज में भेदभाव दिखाई देता है -
आपसी भेदभाव को मिटाने के लिए अपने सुझाव दीजिए।

उत्तर:- आपसी भेदभाव को मिटाने के लिए निम्न सुझाव अपनाए जा सकते हैं -

1. आपसी भेदभाव को मिटाने के लिए सबसे पहले उन बातों की चर्चा ही न करें जिससे यह भेदभाव उपजता हो।
2. सरकार अपनी नीतियों के द्वारा आपसी भेदभाव को बढ़ावा न दें।
3. राजनैतिक दल अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए लोगों की धार्मिक भावनाओं का सहारा न ले।
4. नौकरियों, शिक्षा तथा अन्य किसी भी सरकारी योजनाओं में आरक्षण को बढ़ावा न देकर योग्यता को आधार बनाना चाहिए।
5. स्कूली पाठ्यक्रम भी एकता समता पर आधारित हों।

Material downloaded from myCBSEguide.com.

CBSE कक्षा 9 हिंदी-A क्षितिज

पाठ-10 वाख

पुनरावृत्ति नोट्स

महत्त्वपूर्ण बिन्दु-

1. ललदयद की काव्य शैली को वाख कहा जाता है। अपने वाखों के जरिए उन्होंने जाति और धर्म की संकीर्णताओं से ऊपर उठकर भक्ति के ऐसे रास्ते पर चलने पर ज़ोर दिया है जिसका जुड़ाव जीवन से हो।
2. पहले वाख में कवयित्री ने ईश्वर प्राप्ति के लिए किए जाने वाले अपने प्रयासों की व्यर्थता की चर्चा की है।कवयित्री के अनुसार वे कच्चे धागे की रस्सी से नाव खींच रही हैं अर्थात वह अपनी जीवन रूपी नाव प्रयास रूपी कच्चे धागे से खींच रही है। पता नहीं ईश्वर कब उनकी पुकार सुनकर इस संसार रूपी भवसागर को पार करने में उनकी सहायता करेंगे। जैसे कच्चे सकोरे में पानी रखने से उसमें से पानी टपकने लगता है उसीप्रकार इस सांसारिक जीवन से मुक्ति के सारे प्रयास व्यर्थ हो रहे हैं। उसके मन में रह-रह कर यह हूक उठती है कि कब वह अपने घर जा पायेगी अर्थात ईश्वर से मिल पायेगी।इस पद में रूपक,दृष्टांत अलंकार का सुंदर प्रयोग है।
3. दूसरे पद में बाह्य आडंबरों का विरोध किया गया है। सांसारिक वस्तुओं का उपभोग करके कुछ हासिल नहीं होता और यदि उनका उपभोग नहीं किया जाता तो मन में अहंकार उत्पन्न हो जाता है। कवयित्री जीवन में सम भाव रखने के लिये कहती हैं अर्थात अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण रखना चाहिये तभी बंद द्वार की सांकल खुल पायेगी अर्थात ज्ञान की प्राप्ति के बाद ही मुक्ति का मार्ग मिलेगा।
4. तीसरे पद में कवयित्री के आत्मालोचन की अभिव्यक्ति है,वे कहती हैं कि इस संसार में उनका आगमन सीधी राह से हुआ किन्तु यहाँ आकर वह राह भटक गयी अर्थात सांसारिक प्रपंचों में पड़ कर वह हठयोग आदि से ईश्वर प्राप्ति का उपाय करती रही और सुषुम्न नाड़ी रूपी पुल पार खड़ी रह गयी, अंतत: जीवन रूपी दिन बीत गया । अब इस संसार रूपी भवसागर को पार उतारने वाले ईश्वर रूपी मांझी को उतराई स्वरूप देने के लिये उनके पास कुछ भी नहीं हैं अर्थात उन्होंने जीवन में कोई सदकर्म नहीं किया।
5. चौथे वाख में ईश्वर की सर्वव्यापकता पर बल दिया गया है,उस कल्याणकारी ईश्वर का निवास हर जगह है । हिन्दू-मुसलमानों को उसमें कोई भेदभाव नहीं करना चाहिये । ज्ञानी वहीं व्यक्ति होता जो स्वयं को जान लेता है और स्वयं को जानने वाला ही ईश्वर से साक्षात्कार कर पाता है।

Material downloaded from myCBSEguide.com.

CBSE Test Paper 01

Ch-2 व्याकरण समास

1. निम्नलिखित सामासिक विग्रह कीजिए एवं समास भी लिखिए- (किन्हीं तीन)
   i. हवन सामग्री
   ii. पुस्तकालय
   iii. घनश्याम
   iv. हथकड़ी
2. निम्नलिखित सामासिक विग्रह कीजिए एवं समास भी लिखिए- (किन्हीं तीन)
   i. यथाक्रम
   ii. राजपुत्र
   iii. दोपहर
   iv. पीताम्बर
3. निम्नलिखित सामासिक विग्रह कीजिए एवं समास भी लिखिए- (किन्हीं तीन)
   i. यथानियम
   ii. शराहत
   iii. प्रियसखा
   iv. त्रिवेणी
4. निम्नलिखित सामासिक विग्रह कीजिए एवं समास भी लिखिए- (किन्हीं तीन)
   i. धडाधड
   ii. ग्रामगत
   iii. सतसई
   iv. मुखचन्द्र
5. निम्नलिखित सामासिक विग्रह कीजिए एवं समास भी लिखिए- (किन्हीं तीन)
   i. चरणकमल
   ii. चिड़ीमार
   iii. आजन्म
   iv. परलोकगमन
6. निम्नलिखित सामासिक विग्रह कीजिए एवं समास भी लिखिए- (किन्हीं तीन)
   i. रातों रात
   ii. त्रिभुज
   iii. वनगमन
   iv. पंचवटी

Material downloaded from myCBSEguide.com.

7. निम्नलिखित सामासिक विग्रह कीजिए एवं समास भी लिखिए- (किन्हीं तीन)
   i. पाप-पुण्य
   ii. नीलकंठ
   iii. तुलसीकृत
   iv. यथाविधि
8. निम्नलिखित सामासिक विग्रह कीजिए एवं समास भी लिखिए- (किन्हीं तीन)
   i. ईश्वरदत्त
   ii. यथाशक्ति
   iii. अपना-पराया
   iv. त्रिनेत्र
9. निम्नलिखित सामासिक विग्रह कीजिए एवं समास भी लिखिए- (किन्हीं तीन)
   i. प्रतिदिन
   ii. पंचतन्त्र
   iii. राहखर्च
   iv. कुमारश्रमण
10. निम्नलिखित सामासिक विग्रह कीजिए एवं समास भी लिखिए- (किन्हीं तीन)
   i. प्रतिवर्ष
   ii. तुलसीदासकृत
   iii. विद्युचंचला
   iv. त्रिलोक

Material downloaded from myCBSEguide.com.

CBSE Test Paper 01

Ch-2 व्याकरण समास

Answer

1. i. हवन सामग्री - हवन के लिए सामग्री - (तत्पुरुष समास)
   ii. पुस्तकालय - पुस्तक का आलय - (तत्पुरुष समास)
   iii. घनश्याम - घन के समान श्याम है (कृष्ण) - (बहुव्रीहि समास)
   iv. हथकड़ी - हाथ के लिए कड़ी - (तत्पुरुष समास)
2. i. यथाक्रम = क्रम के अनुसार (अव्ययीभाव समास)
   ii. राजपुत्र = राजा का पुत्र (तत्पुरुष समास)
   iii. दोपहर = दो पहरों का समाहार (द्विगु समास)
   iv. पीताम्बर = पीत है जो अम्बर (कर्मधारय समास)
3. i. यथानियम = नियम के अनुसार (अव्ययीभाव समास)
   ii. शराहत = शर से आहत (तत्पुरुष समास)
   iii. प्रियसखा = प्रिय सखा (कर्मधारय समास)
   iv. त्रिवेणी = तीन वेणियों का समूह (द्विगु समास)
4. i. धडाधड = धड-धड की आवाज के साथ (अव्ययीभाव समास)
   ii. ग्रामगत = ग्राम को गया हुआ (तत्पुरुष समास)
   iii. सतसई = सात सौ पदों का समूह (द्विगु समास)
   iv. मुखचन्द्र = मुख ही है चन्द्रमा (कर्मधारय समास)
5. i. चरणकमल - कमल के समान चरण (तत्पुरुष समास)
   ii. चिड़ीमार - चिड़ियों को मारने वाला (तत्पुरुष समास)
   iii. आजन्म - जन्म से लेकर (अव्ययीभाव समास)
   iv. परलोकगमन - परलोक को गमन (तत्पुरुष समास)
6. i. रातों रात = रात ही रात में (अव्ययीभाव समास)
   ii. त्रिभुज = तीन भुजाओं का समाहार (द्विगु समास)
   iii. वनगमन = वन का गमन (तत्पुरुष समास)
   iv. पंचवटी = पाँच वटों का समाहार (द्विगु समास)
7. i. पाप-पुण्य = पाप और पुण्य (द्वंद्व समास)
   ii. नीलकंठ = नीला है कंठ जिसका (शिव) (बहुव्रीहि समास)
   iii. तुलसीकृत = तुलसी द्वारा कृत (तत्पुरुष समास)
   iv. यथाविधि = विधि के अनुसार (अव्ययीभाव समास)

Material downloaded from myCBSEguide.com.

8. i. ईश्वरदत्त = ईश्वर द्वारा दत्त (तत्पुरुष समास)
   ii. यथाशक्ति = शक्ति के अनुसार (अव्ययीभाव समास)
   iii. अपना-पराया = अपना या पराया (द्वंद्व समास)
   iv. त्रिनेत्र = तीन नेत्र हैं जिसके (शिव) (बहुब्रीहि समास)
9. i. प्रतिदिन = प्रत्येक दिन (अव्ययीभाव समास)
   ii. पंचतन्त्र = पाँच तंत्रों का समूह (द्विगु समास)
   iii. राहखर्च = राह के लिए खर्च (तत्पुरुष समास)
   iv. कुमारश्रमण = कुमार श्रमण (कर्मधारय समास)
10. i. प्रतिवर्ष =हर वर्ष (अव्ययीभाव समास)
    ii. तुलसीदासकृत = तुलसी द्वारा कृत (तत्पुरुष समास)
    iii. विद्युचंचला = विद्युत् जैसी चंचला (कर्मधारय समास)
    iv. त्रिलोक = तीन लोकों का समाहार (द्विगु समास)

Material downloaded from myCBSEguide.com.